PHILOSOPHY

HONS - Part I (Paper I)

चार्वाक - ज्ञानमीमांसा

Dr. S. K. Singh
Mob - 9431449951

→ चार्वाक दर्शन में ज्ञानमीमांसा प्राथमिक है। चार्वाक सर्वप्रथम ज्ञान की मीमांसा करते हैं और तत्पश्चात अपने ज्ञानमीमांसीय मान्यताओं के आधार पर ~~तत्वमीमांसा~~ तत्वमीमांसा एवं नीतिशास्त्र की स्थापना करते हैं।

ज्ञानमीमांसा → तत्वमीमांसा → नीतिशास्त्र

→ ज्ञानमीमांसा का एक मुख्य प्रश्न यह है कि इसमें यथार्थ ज्ञान का साधन क्या है? ज्ञानीय दर्शन में यथार्थ ज्ञान (प्रमा) के साधन को प्रमाण कहा ~~गया~~ है गया है। दूसरे शब्दों में, जिस साधन द्वारा प्रमाता (ज्ञाता) प्रमेय (ज्ञेय) का ज्ञान प्राप्त करता है उसे प्रमाण कहते हैं। विभिन्न दर्शनों में प्रमाणों की संख्या के संदर्भ में मतभेद है। चार्वाक विभिन्न प्रमाणों में से केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण के रूप में स्वीकार करता है तथा अन्य प्रमाणों (अनुमान, शब्द आदि) की प्रामाणिकता का खंडन करता है।

→ ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से चार्वाक प्रत्यक्षवादी है अर्थात् चार्वाक मत में प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है (प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्) यथार्थ ज्ञान प्राप्ति के साधन या स्रोत के रूप में चार्वाक केवल प्रत्यक्ष को स्वीकार करते हैं। वो ज्ञान इन्द्रिय और

विषय (अर्थ) के सन्निकर्ष से उत्पन्न होता है उसे प्रत्यक्ष कहा जाता है। चूंकि ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच हैं। इसलिये यहाँ पंचविध इन्द्रिय प्रत्यक्ष स्वीकार किया गया है।

→ चार्वाक इस प्रत्यक्ष को ही एकमात्र प्रमाण मानने के कारण इस प्रमाण में विद्यमान विश्वसनीयता, अभ्रान्तता एवं निश्चयात्मकता का खंडन करते हैं। अन्य प्रमाणों के खंडन के लिये दिये गये तर्क ही प्रत्यक्ष को एकमात्र सिद्ध करने के आधार बनते हैं।

→ प्रत्यक्ष (Perception) का शाब्दिक अर्थ है - जो आँखों के सामने हो (प्रति + अक्ष)। परन्तु चार्वाक मतानुसार ज्ञानेन्द्रियों ~~(आँख, कान, नाक~~ (चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, रसना और त्वक्) से प्राप्त ज्ञान प्रत्यक्ष है। जब इन ज्ञानेन्द्रियों का पदार्थों के साथ सन्निकर्ष या संयोग होता है तब प्रत्यक्ष ज्ञान होता है (इन्द्रियार्थसन्निकर्ष-जन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्)। स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष ज्ञान की प्रक्रिया के लिये तीन बातों का होना आवश्यक है - इन्द्रिय (Sense Organ), पदार्थ (Object) और सन्निकर्ष (Contact)।

→ चार्वाक का ज्ञानमीमांसीय विचार अन्य भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों के विचार से भिन्न है। अन्य सम्प्रदाय प्रत्यक्ष के अतिरिक्त अन्य प्रमाण/प्रमाणों को भी (यथा - अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति आदि) को भी स्वीकार करता है जबकि चार्वाक केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है।